



## फिलिपींस में भारतीय समुदाय के स्वागत समारोह के अवसर पर प्रधानमंत्री के भाषण का अंश

Posted On: 13 NOV 2017 10:50PM by PIB Delhi

नमस्ते,

आगर आपको मिले बिना मैं जाता तो मेरी यात्रा अचूरी रहती। अलग-अलग स्थानों से आप समय निकाल करके आए हैं। वो भी **working day** होने के बावजूद भी आए हैं। ये भारत के प्रति आपका जो प्यार है, भारत के प्रति आपका जो लगाव है उसी का परिणाम है कि हम सब इस एक छत के नीचे आज इकट्ठे हुए हैं। मैं सबसे पहले तो आपको विशेष रूप से बधाई देना चाहता हूँ। क्योंकि मैं भारत के बाहर जहां भी जाता हूँ। तो भारतीय समुदाय के दर्शन का प्रयास जरूर करता हूँ। लेकिन आज आप लोगों ने जो **discipline** दिखाई है इसके लिए मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई। ये अपने आप में एक बहुत बड़ी ताकत होती है वरना इतनी सारी संख्या और इतने आराम से मैं सबको मिल पाऊं ये अपने आप मेरे लिए बहुत खुशी का अवसर है और इसके लिए आप सबबधाई के पात्र हैं, अभिनंदन के पात्र हैं।

मेरा इस देश में पहली बार आना हुआ है लेकिन भारत के लिए ये भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है और जब से प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करने की आप लोगों ने मुझे जो जिम्मेवारी दी है। प्रारंभ से ही हमने **act east policy** इस पर बल दिया है। क्योंकि एक प्रकार से हम इन देशों में बहुत नजदीकी महसूस करते हैं। सहज रूप से अपनापन महसूस करते हैं। कुछ-न-कुछ कारणों से, कुछ-न-कुछ मात्रा में, कुछ-न-कुछ विरासत के कारण एक **emotional binding** हमारे बीच में है। शायद ही यहां के कोई देश ऐसे होंगे जिनके विषय में रामायण अपरिचित हों, राम अपरिचित हों, शायद ही बहुत कम देश होंगे कि जिनहें बुद्ध के प्रति श्रद्धा न हो। ये अपने आप में एक बहुत बड़ी विरासत है और इस विरासत को संवारने का, सजाने का काम भारतीय समुदाय को यहां रहता है वो बहुत बखूबी कर सकता है। एक काम एक **embassy** करती है। उससे अनेक गुणा काम एक सामान्य भारतीय कर सकता है। और मैंने अनुभव किया है कि दुनिया भर में आज हर भारतीय गौरव के साथ सर उठा करके आंख में आंख मिलाकर के गौरव के साथ भारतीय होने की बात करता है। किसी भी देश के लिए ये एक बहुत बड़ी पूंजी होती है। और विश्व भर में फैला हुआ भारतीय समुदाय और भारत के लोग सदियों से देशाटन करने की वृत्ति प्रवृत्ति के रहे हैं। सदियों पहले हमारे पूर्वज निकले हैं। और भारत की एक विशेषता रही है। हम जहां गए जिसे मिले उसे अपना बना लिया। ये छोटी चीज नहीं है अपनापन बचाए रखते हुए हर किसी को अपना बना लेना ये तब संभव होता है। भीतर एक दृढ़ आत्मविश्वास होता है। और आप लोग जहां गए है वहां उस दृढ़ आत्मविश्वास का परिचय कयाया है। आप कहीं पर भी होंगे कितने ही सालों से बाहर होंगे कितनी ही पीढ़ियों से बाहर रहे होंगे हो सकता है, भाषा का नाता टूट भी गया हो, लेकिन अगर भारत में कुछ बुरा होता है तो आपको भी नॉद नहीं आती है। और कुछ अच्छा हुआ है तो आप भी फूले नहीं समाते हैं। और इसलिए वर्तमान सरकार का एक निरंतर प्रयास है कि देश को विकास की उन उंचाइयों पर ले जाए जिससे हम विश्व की बराबरी कर सकें और अगर एक बार बराबरी करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लिया मैं नहीं मानता हूँ कि हिन्दुस्तान को आगे बढ़ने से कोई रोक पाएगा। कठिनाईयां जो होती हैं वो एक बराबरी के स्टेज पर पहुंचने तक होती हैं। और एक बार उन कठिनाईयों को पार कर लिया फिर तो **level playing field** मिल जाता है। और भारतीयों के दिल, दिमाग, पुंजाओं में वो दम है। कि फिर उसको आगे जाने से कोई रोक नहीं पाएगा। और इसलिए पिछले तीन-साढ़े-तीन साल से सरकार का लगातार ये प्रयास रहा है कि भारत का जो सामर्थ्य है सवा सौ करोड़ देशवासियों की जो शक्ति है, भारत के पास जो प्राकृतिक संसाधन है। भारत के पास जो सांस्कृतिक विरासत है। भारत के लोग जिन्होंने किसी भी युग में कोई भी युग निकाल दीजिए। सौ साल पहले, पांच सौ साल पहले, हजार साल पहले, पांच हजार साल पहले, इतिहास में एक भी घटना नजर नहीं आती है कि हमने किसी का दुरा किया हो।

जिस देश के पास जब मैं दुनिया के देश के लोगों से मिलता हूँ और जब मैं उनको बताता हूँ कि प्रथम विश्वयुद्ध और दूसरा विश्वयुद्ध न हमें किसी की जमीन लेनी थी न हमें कहीं झंडा फहराना था। न हमें दुनिया को कब्जा करना था लेकिन शांति की तलाश में मेरे देश के डेढ़ लाख से ज्यादा जवानों ने शहादत दी थी। प्रथम विश्वयुद्ध और दूसरे विश्वयुद्ध में शांति के लिए लेना-पाना कुछ नहीं शांति के लिए डेढ़ लाख हिन्दुस्तानी शहादत मोल ले कोई भी भारतीय सीना तानकर के कह सकता है कि हम लोग दुनिया को देने वाले लोग है लेने वाले लोग नहीं और छीनने वाले तो कदाई ही नहीं।

आज विश्व में **Peace keeping Force United Nations** से जुड़ा हुआ कोई भी हिन्दुस्तानी गर्व कर सकता है। कि आज दुनिया में हर जगह पर कहीं अशांति पैदा होती है तो UN के द्वारा **Peace keeping Force** जाकर के वहां शांति बनाए रखने के लिए अपनी भूमिका अदा करते हैं। पूरे विश्व में **Peace keeping Forces** में सबसे ज्यादा योगदान करने वाले कोई हैं तो हिन्दुस्तान के सिपाही हैं। आज भी दुनिया के अनेक ऐसे अशांत क्षेत्रों में भारत के जवान तैनात हैं। बुद्ध और गांधी की धरती शांति उनले मात्र कोई शब्द नहीं है। हम वो लोग हैं जिन्होंने शांति जीकर के दिखाया है। शांति को हमने पचाया है। शांति हमारी रोग में है। और तभी तो हमारे पूर्वजों ने वसुधैव कुटुम्बकम्- विश्व एक परिवार है। ये मंत्र हमें दिया। जो मंत्र हमने जीकर के दिखाया है। लेकिन ये सारी बातों का सामर्थ्य दुनिया तब स्वीकार करती है जब भारत मजबूत हो, भारत सामर्थ्यवान हो, भारत जीवन के हर क्षेत्र में नई उंचाइयों को प्राप्त करने वाला गतिशील हो। तब जाकर के विश्व स्वीकार करता है। तत्त्व ज्ञान कितना ही भय्य क्यों न हो, इतिहास कितना ही भय्य क्यों न हो, विरासत कितनी ही महान क्यों न हो, वर्तमान उतना ही उज्ज्वल, तेजस्वी और पराक्रमी होना चाहिए तब जाकर के दुनिया जिगती है। और इसलिए हमारे भय्य भूतबाल से प्रेरणा लेना उससे पाठ पढ़ना वो जितना ही महत्वपूर्ण है उतना ही 21वीं सदी अगर एशिया की सदी माना जाती है। तो ये हम लोगों का कर्तव्य बनता है कि 21वीं सदी हिन्दुस्तान की सदी बने । और मुश्किल मुझे नहीं लगता है। तीन साल, साढ़े तीन साल के अनुभव के बाद मैं कहता हूँ, ये भी संभव है। पिछले दिनों आपने देखा होगा भारत से जहां तक सरकार का संबंध है। सरकारात्मक खर्चें आती रहती है अब डर नहीं रहता है किहां पता नहीं कोई **negative** खबर आ जाएगी तो ऑफिस जाएंगे तो लोग क्या पूछेंगे। अब घर से निकलते ही विश्वास, नहीं नहीं- हिन्दुस्तान से अच्छी खबरें ही आएंगी। सवा सौ करोड़ का देश है। उसकी मुख्य धारा जो है। समाज की मुख्यधारा हो, सरकार की मुख्यधारा हो। वो सरकारात्मकता के इर्द-गिर्द ही चल रही है। **positivity** के इर्द-गिर्द ही चल रही है। हर बार फैसले देश हित में लिए जा रहे है विकास को ध्यान में रख करके लिए जा रहे है। सवा सौ करोड़ का देश आजादी के 70 साल बाद अगर 30 करोड़ परिवार बैंकंग व्यवस्था से बाहर हो। तो देश की **economy** कैसे चलेगी।

हमने बीड़ा उठाया प्रधानमंत्री जनधन योजना शुरू की और जीरो बैंलेस हो तो भी **bank account** खोलना है, बैंक वालो को परेशानी हो रही थी। और **Manila** में तो बैंक का क्या दुनिया है, सबको पता है। बैंक वाले मुझसे झगड़ा कर रहे थे कि साइब कम-से-कम स्टेशनरी का पैसा तो लेने दो। मैंने कहा ये देश के गरीबों का हक है। उनको बैंक में सम्मान भर **entry** मिलनी चाहिए। वो बेचारा सोचता था। वो बेचारा सोचता था। ये बैंक अगर कंडीशन बाहर वो दो बड़े बंदूक वाले खड़े हैं वो गरीब जा पाएगा कि नहीं जा पाएगा। और फिर साइ्कार के पास चला जाता था। और साइ्कार क्या करता है ये हम जानते है। 30 करोड़ देशवासियों को जीरो बैंलेस से **account** खोला और कभी-कभी आपने अभीर कोम देखा होगा। मैंने अमीरों को भी देखा है, अमीरों की गरीबी को भी देखा है। आपने गरीबो को भी देखा होगा लेकिन मैंने गरीबों की अमीरी को देखा है। **zero balance bank account** खोले थे। लेकिन आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि उन जनधन **account** में आज उन गरीबों को **saving** का आवत लगी पहले बेघारे घर में गैहू में पैसे छुपा के रखते थे, गढ़ के नीचे रखते थे और वो भी अगर पति की आदतें खराब हों तो कहीं और खर्चा कर देता था। वो डरती रहती थीं माताएं। आपको जान करके खुशी होगी। इतने कम समय में उन जनधन **account** में **67 thousand crore rupees** गरीबों का saving हुआ है। देश की अर्थव्यवस्था की मूलधारा में गरीब सक्रीय भागीदार हुआ है। अब ये छोटा परिवर्तन नहीं है जी, जो शक्ति, सामर्थ्य, व्यवस्था के बाहर था वो आज व्यवस्था के केंद्र बिंदु में आ गया।

ऐसे अनेक **initiative** है जो कभी चर्चा तक में नहीं थे, किसी की कल्पना में भी नहीं थे, कुछ लोगों को तो ये **problem** है कि भई ऐसा भी हो सकता है क्या? हमने लोगों ने तय करके रख लिया गया था। अपना देश है, जैसा है, वैसा है चलेगा, क्यों चलेगा भई अगर सिंगपुर स्वच्छ हो सकता है, फिलीपीनस स्वच्छ हो सकता है, मनीला स्वच्छ हो सकता है तो हिन्दुस्तान स्वच्छ नहीं हो सकता है क्या? देश का कौन नागरिक होगा जो गंदगी में रहना पंसद करता होगा। कोई नहीं चाहता है। लेकिन किसी ने **initiative** लेना पड़ता है। किसी ने जिम्मेवारी लेनी पड़ती है। सफलता विफलता की चिंता किए बिना काम हाथ में लेना पड़ता है। महात्मा गांधी जी ने जहां से छोड़ा था वहीं से हमने आगे लेने का प्रयास किया है। और मैं कहता हूँ आज करीब हिन्दुस्तान में सवा दो लाख से अधिक गांव **open defecation free** हो गए हैं। तो एक तरफ समाज के सामान्य मानवी को **quality of life** में कैसे बदलाव आया।

अब हमारे देश में आप में से जो लोग पिछले 20, 25, 30 साल में भारत से यहां आए होंगे। या अभी भी भारत से संपर्क में होंगे तो आपको पता होगा। कि हमारे यहां गैस का सैलेंडर लेना घर में गैस का कनेक्शन लेना ये बहुत बड़ा काम माना जाता था और घर में अगर गैस कनेक्शन आ जाए, सैलेंडर आ जाए तो अडोस-पडोस में ऐसा माहौल बनता था जैसे **Mercedes** गाड़ी आई है। यानि बहुत बड़ा **achievement** माना जाता था। कि हमारे घर में अब गैस का कनेक्शन आ गया और गैस का कनेक्शन इतनी बड़ी चीज हुआ करती थी हमारे देश में कि **parliament** के **member** को 25 कूपन मिलते थे। इस चीज के लिए- कि आपके **parliamentary area** में आप साल में 25 परिवारों को **oblige** कर सकते हैं। बाद में वो क्या करते थे वो कहना नहीं चाहता हूँ अखबार में आता था। यानि गैस सिलेंडर का कनेक्शन आपको याद होगा 2014 में जब **parliament** का चुनाव हुआ तो उस समय एक तरफ बीजेपी थी एक तरफ कांग्रेस पार्टी थी। भारतीय जनता पार्टी ने मुझे जिम्मेवारी दी थी उस चुनाव का नेतृत्व करने के लिए। वहां पर एक मीटिंग हुई कांग्रेस पार्टी की और देश इंतजार कर रहा था कि वहां कोई तय होगा किसके नेतृत्व में चुनाव लड़ेंगे। शाम को मीटिंग के बाद कांग्रेस की **press conference** हुई। उस **press conference** में क्या कहा गया कि ये कहा गया अगर हमारी 2014 में चुनाव हम जीतेगे तो हम साल भर में अभी जो 9 सिलेंडर देते हैं। हम 12 सिलेंडर देते याद है कि नहीं है आपको यानि 9 सिलेंडर की 12 सिलेंडर इस मुद्दे पर कांग्रेस पार्टी चुनाव लड़ रही थी। यानि ये दूर की बात नहीं है 2014 तक सोच का यही दायरा था, जी और देश भी ताली बजा रहा था अच्छा अच्छा। बहुत अच्छा 9 के 12 मिल जाऐंगे।

जो माताएं लकड़ी का बूट्ला जलाकरके खाना पकाती हैं। उन पांच करोड़ परिवारों में गैस का सिलेंडर और कनेक्शन देंगे। अब मुझे बताइए आपको कैसा लगता होगा ये सुन करके कि एक तरफ सोचने की सीमा 9 या 12, 9 या 12 और दूसरी तरफ एक ऐसा ईसान को कहता है कि मैं तीन साल में पांच करोड़ परिवारों को सिलेंडर दूंगा। और कनेक्शन मुफ्त में दूंगा। एक गरीब मां जब लकड़ी के चूल्हे से खाना पकाती है। तो **scientists** का कहना है उसके शरीर में एक दिन में चार सौ सिरेप्ट का धुंआ उस मां के शरीर में जाता है। क्या गुनाह है उसका। उसके स्वास्थ्य की चिंता कौन करेगा और जो बच्चे खेलते होंगे घर में वो भी तो उससे अछूता नहीं रह सकते, उनका क्या हाल होता होगा। क्या उनकी ज़िंदगी में बदलाव आना चाहिए कि नहीं आना चाहिए और लकड़ी लाना और गीली लकड़ी है तो खाना पकाना कितनी तकलीफ से गुजारा होता होगा। आजादी के 70 साल के बाद उस कठिनाई से उसको मुक्ति मिल सकती है कि नहीं मिल सकती है। और कुछ लोगों का ये सोच है। यानि सोच मूलभूत बात में आपको ये कहना चाहता हूँ। कि सोचने का जो दारिद्र है गरीबी है, सोचने की गरीबी वो कभी-कभी बहुत ज्यादा संकर पैदा करती है।

मैंने तालकिले से एक बार भारत की जनता को एक बार **request** की। मैंने कहा कि भाई अगर आप **afford** कर सकते हो तो आपको गैस की सप्लिडी की क्या जरूरत है। साल भर का 800, 1000, 1200 रुपये में क्या **interest** है आपका, छोड़ दीजिए न, इतना सा कहा था। और अगर पर्व के साथ इस बात पर अनुभव करेंगे मेरे देश के सवा करोड़ परिवार, सवा करोड़ परिवार छोटा परिवार नहीं है। उन्होंने **voluntarily**गैस की सप्लिडी छोड़ दी। और मोदी ने इसको खजाने में नहीं डाला।

मोदी ने तय किया कि वो मैं गरीबों को दे दूंगा और 3 करोड़ परिवारों को मुफ्त में गैस कनेक्शन दिशा में हम सफलता पूर्वक आगे बढ़े। 3 करोड़ परिवारों को पहुंचा दिया। मेरा वायदा 5 करोड़ परिवार का है। भारत **total** परिवार 25 करोड़ है। 25 करोड़ परिवार उसमें से 5 करोड़ का वायदा है 3 करोड़ कर दिया है। अच्छा इसमें भी कुछ कमाल है जी अपने घर के लोग हैं तो कुछ बात बता सकता हूँ। कभी-कभार सरकार की सप्लिडी जाती थी तो लगता था कि लोगों का भला होता होगा। तो मैंने क्या किया आकर के उसको आधार के साथ लिंक कर दिया। **bio metric identification** तो उसके कारण पता चला कि ऐसे-ऐसे लोगों के नाम पर गैस की सप्लिडी जाती थी जो पैदा ही नहीं हुए। मतलब कहां जाता होगा। मुझे बताइए कहां जाता होगा। किसी न किसी की जेब में तो जाता होगा न अब मैंने उस पर दृश मार दिया बंद हो गया। सिर्फ इस प्रकार की सप्लिडी सही व्यक्ति को मिले, बूढ़े भूतिया लोग हैं जो पैदा ही नहीं हुए। उनको न मिले इतना सा काम किया बड़ा काम नहीं किया इतना सा ही किया परिणाम क्या हुआ मालूम है। 57 **thousand crore rupees** बच गया। और ये एक बार नहीं बचा ये हर वर्ष 57 **thousand** जाता था। अब बताइए कहां जाता था भई। अब जिनकी जेब में जाता था उनको मोदी कैसा लगेगा वो कभी फोटो निकालने के लिए आएगा क्या? आएगा क्या? वो मोदी को पंसंद करेगा क्या? मुझे बताइए काम करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? देश में बदलाव आना चाहिए कि नहीं चाहिए? कठोर निर्णय करने चाहिए कि नहीं करने चाहिए? देश को आगे ले जाना चाहिए कि नहीं ले जाना चाहिए?

आप लोग आकर के मुझे आर्शीवाद दे रहे हैं मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। जिस मकसद के लिए देश ने मुझे काम दिया है उस मकसद को पूरा करने में मैं कोई कमी नहीं रखूंगा। 2014 के पहले खबरें ख्या आती थीं, कितना गया कोयले में गया, 2 जी में गया, ऐसे ही आता था ना। 2014 के बाद मोदी को क्या पूछा जाता है मोदी जी बताओ तो कितना आया? देखिए ये बदलाव है। वो एक वक्त था जब देश परेशान था कितना गया आज वक्त है कि देश खुशी की खबर सुनने के लिए पूछता रहता है मोदी जी बताइए न कितना आया।

हमारे देश में कोई कमी नहीं है दोस्तो देश को आगे बढ़ने के लिए हर प्रकार की संभावनाएं है, हर प्रकार सामर्थ्य है, उसी बात को लेकर के कई महत्वपूर्ण नीतियां लेकर के हम चल रहे हैं। देश विकास की नई उंचाइयों को पार कर रहा है और जन भागीदारी से अब बढ़ रहे हैं। सामान्य से सामान्य मानवी को साथ लेकर के चल रहे हैं और उसके परिणाम इतने अच्छे मिलेंगे कि आप भी अब लंबे समय तक यहां रहना पंसंद नहीं करेंगे। तो मुझे अच्छा लगा इतनी बड़ी मात्रा में आकर के आपने आर्शीवाद दिए।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

अतुल तिवारी/शाहबाज हसीबी/बालूमीक महतो/ममता

(Release ID: 1509392) Visitor Counter : 45

